जंतुओं पर शोध के प्रकाशन में पूर्वाग्रह

बीमारियों के नए-नए उपचार खोजने के लिए चिकित्सा वैज्ञानिक जंतुओं पर प्रयोग करते हैं। इन प्रयोगों पर कई नैतिक सवाल तो उठते ही हैं, यह सवाल भी उठता है कि ये वास्तव में कितने उपयोगी हैं। हाल ही में एडिनबरा विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर क्लीनिकल ब्रेन साइन्स विभाग के माल्कोम मेक्लियॉड और उनके दल ने जंतु परीक्षणों का एक अध्ययन करके बताया है कि प्रकाशित किए गए जंतु परीक्षणों के परिणामों से सम्बंधित उपचार के इन्सानों में सफल होने की संभावना को 30 प्रतिशत तक अधिक आंका जाता है। और इसका प्रमुख कारण यह है कि जब जंतु परीक्षणों के नतीजे नकारात्मक रहते हैं तो उन्हें प्रकाशित ही नहीं किया जाता है।

दरअसल, मेक्लियॉड व उनके साथी यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि जंतुओं पर किए गए परीक्षणों के बाद कोई उपचार मानव परीक्षणों तक क्यों नहीं पहुंच पाता। इसके लिए उन्होंने स्ट्रोक सम्बंधी उपचारों का अध्ययन किया। उन्होंने 16 अलग-अलग उपचारों के1359 परीक्षणों पर गौर किया।

सबसे पहले इस दल ने प्रकाशन में पूर्वाग्रह की स्थिति का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि कम से कम 16 प्रतिशत परीक्षण अप्रकाशित ही रहते हैं। होता यह है कि कोई भी शोधकर्ता किसी परीक्षण के नकारात्मक नतीजों को एक शोध पत्र का रूप देकर प्रकाशन के लिए भेजने में रुचि नहीं रखता क्योंकि शोध पत्रिकाएं इन्हें प्रकाशित करने में कम रुचि दिखाती हैं। इसके अलावा, यदि ऐसे परिणाम प्रकाशित हो गए, तो बाद में अन्य शोधकर्ता अपने शोध पत्रों में इनका हवाला बहुत कम देते हैं। एक मायने में इस तरह के नकारात्मक परिणाम प्रकाशित करने में की गई मेहनत 'बेकार' ही जाती है।

मेक्लियॉड व साथियों का मत है कि इस संदर्भ में शोध पत्रिकाओं को तो अपनी नीति बदलना ही चाहिए, मगर सिर्फ उतने से बात नहीं बनेगी। आजकल कुछ शोध पत्रिकाएं नकारात्मक नतीजों के लिए विशेष स्थान रखने लगी हैं। एक शोध पत्रिका तो मात्र नकारात्मक नतीजे ही प्रकाशित करती है। मेक्लियॉड मानते हैं कि इस मामले में कुछ और कदम उठाने होंगे ताकि ऐसे परीक्षणों से निकली सारी जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हो पाए।

जैसे आजकल कई देशों में यह ज़रूरी कर दिया गया है कि यदि आप किसी दवा का परीक्षण इन्सानों पर करना चाहते हैं, तो पहले आपको एक रजिस्टर में इस परीक्षण को पंजीकृत करना होगा। ऐसा करने पर उसके नतीजों के प्रकाशन की संभावना बढ़ती है। मेक्लियॉड कहते हैं कि यह व्यवस्था जंतु परीक्षणों के मामले में भी स्थापित की जानी चाहिए। तर्क यह है कि जंतु परीक्षण अच्छे उपचारों की खोज का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं मगर इसके लिए ज़रूरी है कि इन्हें ठीक ढंग से किया जाए और जानकारी सब लोगों को मिले। ज़ाहिर है, यदि आप कोई शोध कार्य करना चाहते हैं तो आपके पास उस समय उपलब्ध सारी जानकारी होनी चाहिए, न कि सिर्फ वह जो सकारात्मक है। ***(स्रोत फीचर्स)***